

प्रतापगढ़ संदेश

शादी समारोह से लौट रही युवती के साथ किशोर ने किया दुष्कर्म

पुलिस ने दर्ज किया
मामला

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। शादी समारोह से घर लौट रही युवती से गांव के ही एक किशोर ने खेत में उसके साथ दुष्कर्म किया, बाद में युवती ने घरवालों को जान वाल बताई तो परिवारों को सचना दी जिसके बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने आरोपियों को हिरासत में ले लिया। पुलिस ने बताया कि आरोपी किशोर के खिलाफ दुष्कर्म का मुकदमा दर्ज कर जांच रही है।

कि धृइ थाना के एक गांव निवासी व्यक्ति की पत्री की बारात रविवार रात आई थी। शादी समारोह में शामिल होने के लिए

महिला को पीटा, शिकायत खेत्राधिकारी से

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। कोटे के चयन को लेकर हुई बैठक में अपनी बात रखने पर एक महिला को आरोपियों ने जातिसूचक शब्दों का प्रयोग करते हुए मारपीट कर जख्मी कर दिया। पीड़ित महिला ने इस संबंध में शिकायती पत्र दिया। वही कोटवाली के बाहे भी काइ करवाई नहीं हुई तो उसने शेष अधिकारी को शिकायती पत्र दिया है। वही कोटवाली के चेम्यरी गांव की रहने वाली हुई पत्नी अशोक ने बताया कि वह अनुसूचित जाति की महिला है जीते 20 मई को गांव में कोटे के चयन को लेकर बैठक हुई थी जिसमें उसने अपनी बात रखी जिससे गांव का एक व्यक्ति नाराज होकर उसे जातिसूचक शब्दों का प्रयोग करते हुए मार-पीट पीड़ित महिला को जहां बैठक करवाई नहीं हुई तो महिला से पर एक बात दिया जाए। पीड़ित महिला ने इस संबंध में शिकायत किया तो कोई कार्रवाई नहीं हुई तो महिला ने क्षेत्राधिकारी को शिकायती पत्र देकर कार्रवाही की मांग की है।

गांव की एक युवती गई थी। शादी समारोह के बाद देर रात युवती अपने घर जाने लागी तो आरोप है कि वह तीन में पहले से खी खड़े गांव के ही एक वर्षीय किशोर ने उसका मूँह बद्धकर कर एक खेत में ले गया और उसके साथ

दुष्कर्म किया। किसी तरह युवती रोती हुई घर पहुंची तथा अपने साथ हुई घटना की जानकारी दी। सूचना पर मौके पर पहुंची कंधेरन्ड पुलिस ने मौके पर पहुंची कंधेरन्ड पुलिस ने महिला कारस्टेल के साथ युवती को उपचार एवं मैडिकल के लिए अस्पताल भेजा

और आरोपित किशोर को हिरासत में ले लिया। एसओ कंधेरन्ड ठाकुर ने जारी किया। आरोपित किशोर के खिलाफ दुष्कर्म का मुकदमा दर्ज कर रखा गया है, तथा पुलिस मामले की जांच कर रही है।

गांव की एक युवती गई थी। शादी समारोह के बाद देर रात युवती अपने घर जाने लागी तो आरोप है कि वह तीन में पहले से खी खड़े गांव के ही एक वर्षीय किशोर ने उसका मूँह बद्धकर कर एक खेत में ले गया और उसके साथ

बिना ड्रेस ओटी में घुसे स्टाफ को प्रिंसिपल ने बाहर निकाला

सफाई को लेकर सर्जन और सीएमएस को किया कर्ता
अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। मंत्री के आगमन को लेकर मैडिकल कॉलेज की अस्पतालों में सफाई और चिकित्सीय व्यवस्था की नज्ब टटोलने सोमवार को निरीक्षण पर निकले तो मैडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. सालिल कुमार श्रीवास्तव को कई खामियां मिली। जिससे उनका माथा ठनक गया। गंदीजी देख उन्होंने सर्जन और सीएमएस को किया किया। एक डाक्टर के खिलाफ व्याख्यानीय कार्रवाई करने का निर्देश सोमवार को दिया। ओटी में बिना एप्रिल मिले स्टाफ को डॉक्टर बाहर निकाल दिया। उन्होंने शाम तक सफाई दुरुस्त न मिलने पर सख्त बारांसार्व दर्ज किया।

मंत्री के आगमन के मद्देनजर चाक चैबंड व्यवस्था को लेकर प्रिंसिपल ने दिखाए तेवर

निरीक्षण से हड्डकंप मचा रहा। प्रिंसिपल डॉक्टर, सालिल श्रीवास्तव सीएमएस डॉ. सुरेश सिंह को लेकर जारी करने के लिए राजा प्रताप बहादुर अस्पताल का निरीक्षण पर निकले तो मैडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. सालिल कुमार जायसवाल ने पुलिस द्वारा जारी की दी गई तहरीर में कहा है कि पचीस मध्य की रात्रि उसके घर बसमारों ने सोचीकी के सहारे घर में भुसकर चोरी के खिलाफ दुष्कर्म का मुकदमा दर्ज कर रखा गया है, तथा पुलिस मामले की जांच कर रही है।

स्टाफ की कमी कैसे होगी सफाई

प्रतापगढ़। मैडिकल कॉलेज बनने से काम पहले से तीन गुना अधिक बढ़ गया है। लेकिन स्टाफ को संख्या वही पुरानी ही है। अगर बाहर रात तीन में सफाई की बात की जाय तो अब तो पहले से भी कम है। जो इनमें बड़े अस्पताल के लिए काफी नहीं है। मल्टीपीरज स्टाफ इन कामों को करने से दूरी बनाए हुए हैं। जब तक इनसे ढांग का काम नहीं लिया जाएगा व्यवस्था सुधरने वाली नहीं है।

गांव के रहने वाली हलीमा ने बताया कि गांव के पंचायत मित्र पर्व दुर्विवाह का आरोप पहुंचा। पर्व, प्रतापगढ़। मनरेख में काम करने वाली महिलाओं ने पंचायत मित्र पति के ऊपर उत्पीड़न का आरोप लगाया है। पट्टी कोटवाली के खिलाफ बाहर निकाल दिया। उन्होंने शाम तक सफाई दुरुस्त न मिलने पर सख्त बारांसार्व दर्ज किया।

प्रतापगढ़। श्री गुलाब सिंह, प्रतापगढ़।

दशहरा की तैयारिया पूर्ण करने के लिए विश्वविद्यालय की तैयारियों को अंतिम रूप दिया गया। बेल्हा देवी धाम में आयोजन समाप्ति की बैठक हुई जिसमें 30 मई को श्री गंगा दशहरा महोत्सव करने की तैयारियों को अंतिम रूप दिया गया। विश्वविद्यालय की साथ बदलता का काम आयोजन समिति की देखरेख में जिससे उन्होंने बताया कि दो महिलाओं का आपस में विवाह था किसी के कहने पर वह लोग झूटा आरोप लगा रही है। मानव ओटी में बिना एप्रिल मिले स्टाफ को डॉक्टर बाहर निकाल दिया। उन्होंने शाम तक सफाई दुरुस्त न मिलने पर सख्त बारांसार्व दर्ज किया।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। श्री गंगा दशहरा महोत्सव की तैयारियों को अंतिम रूप दिया गया। बेल्हा देवी धाम में आयोजन समाप्ति की बैठक हुई जिसमें 30 मई को श्री गंगा दशहरा महोत्सव करने की तैयारियों को अंतिम रूप दिया गया। विश्वविद्यालय की साथ बदलता का काम आयोजन समिति की देखरेख में जिससे उन्होंने बताया कि दो महिलाओं का आपस में विवाह था किसी के कहने पर वह लोग झूटा आरोप लगा रही है।

कार्यक्रम के संयोजक रोशनलाल उमरवरेख ने बताया कि 30 मई को होने वाले गण

प्रतापगढ़। श्री गंगा दशहरा महोत्सव की तैयारियों को अंतिम रूप दिया गया। बेल्हा देवी धाम में आयोजन समाप्ति की बैठक हुई जिसमें 30 मई को श्री गंगा दशहरा महोत्सव करने की तैयारियों को अंतिम रूप दिया गया। विश्वविद्यालय की साथ बदलता का काम आयोजन समिति की देखरेख में जिससे उन्होंने बताया कि दो महिलाओं का आपस में विवाह था किसी के कहने पर वह लोग झूटा आरोप लगा रही है।

प्रतापगढ़। श्री गंगा दशहरा महोत्सव की तैयारियों को अंतिम रूप दिया गया। बेल्हा देवी धाम में आयोजन समाप्ति की बैठक हुई जिसमें 30 मई को श्री गंगा दशहरा महोत्सव करने की तैयारियों को अंतिम रूप दिया गया। विश्वविद्यालय की साथ बदलता का काम आयोजन समिति की देखरेख में जिससे उन्होंने बताया कि दो महिलाओं का आपस में विवाह था किसी के कहने पर वह लोग झूटा आरोप लगा रही है।

प्रतापगढ़। श्री गंगा दशहरा महोत्सव की तैयारियों को अंतिम रूप दिया गया। बेल्हा देवी धाम में आयोजन समाप्ति की बैठक हुई जिसमें 30 मई को श्री गंगा दशहरा महोत्सव करने की तैयारियों को अंतिम रूप दिया गया। विश्वविद्यालय की साथ बदलता का काम आयोजन समिति की देखरेख में जिससे उन्होंने बताया कि दो महिलाओं का आपस में विवाह था किसी के कहने पर वह लोग झूटा आरोप लगा रही है।

प्रतापगढ़। श्री गंगा दशहरा महोत्सव की तैयारियों को अंतिम रूप दिया गया। बेल्हा देवी धाम में आयोजन समाप्ति की बैठक हुई जिसमें 30 मई को श्री गंगा दशहरा महोत्सव करने की तैयारियों को अंतिम रूप दिया गया। विश्वविद्यालय की साथ बदलता का काम आयोजन समिति की देखरेख में जिससे उन्होंने बताया कि दो महिलाओं का आपस में विवाह था किसी के कहने पर वह लोग झूटा आरोप लगा रही है।

प्रतापगढ़। श्री गंगा दशहरा महोत्सव की तैयारियों को अंतिम रूप दिया गया। बेल्हा देवी धाम में आयोजन समाप्ति की बैठक हुई जिसमें 30 मई को श्री गंगा दशहरा महोत्सव करने की तैयारियों को अंतिम रूप दिया गया। विश्वविद्यालय की साथ बदलता का काम आयोजन समिति की देखरेख में जिससे उन्होंने बताया कि दो महिलाओं का आपस में विवाह था किसी के कहने पर वह लोग झूटा आरोप लगा रही है।

प्रतापगढ़। श्री गंगा दशहरा महोत्सव की तैयारियों को अंतिम रूप दिया गया। बेल्हा देवी धाम में आयोजन समाप्ति की बैठक हुई जिसमें 30 मई को श्री गंगा दशहरा महोत्सव करने की तैयारियों को अंतिम रूप दिया गया। विश्वविद्यालय की साथ बदलता का काम आयोजन समिति की देखरेख में जिससे उन्होंने बताया कि दो महिलाओं का आपस में विवाह था किसी के कहने पर वह लोग झूटा आरोप लगा रही है।

प्रतापगढ़। श्री गंगा दशहरा महोत्सव की तैयारियों को अंत



संपादकीय

સર્વલોકોપકારિણી બનાને વાલી ગંગા

भारतीय संस्कृति और सभ्यता के उत्कर्ष में महत्वपूर्ण स्थान रखने वाली गंगा न केवल हमारे देश की सबसे महान और पवित्र नदी है, अपितु विश्व की सर्वेष्ट नदियों में अपने अनेक विशिष्ट गुणों के कारण सर्वप्रथम स्थान रखती है। प्राचीन भारतीय सभ्यता-संस्कृति को सर्वलोकोपकारिणी बनाने में गंगा की लहरें ने ही सर्वप्रथम मानवहृदय को मंगलमयी प्रेरणा दी थी। देश के पावन जीवन में गंगा की निर्मल धारा प्राचीनकाल से अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। भारत के बहुसंख्यक हिन्दुओं के लिए तो यह धरती पर बहकर भी आकाशवासी देवताओं की नदी है। और इस लोक की सुख-समृद्धियों की विधानहोकर भी परलोकों का सम्पूर्ण लेखा-जोखा संवारने वाली है। कृषिकर्म में विशेष सहायता होने के कारण गंगा नदी हमारे देश भर में सबसे अधिक अन्न देने वाली अन्नपूर्णा है। हमारे देश में गंगा की घाटी में सर्वप्रथम कृषिकर्म का श्रीगणेश किया गया था। यही कारण है कि कृषि प्रधान भारतभूमि में गंगा एक देवी के रूप में मान्य व पूज्य है। पुराणों तथा अन्य आचार ग्रन्थों में गंगा के साथ अनेक नदियों के सम्बन्ध में देवीरूप की अनेक कथाएँ अंकित हैं। परिमाण, जलराशि तथा अन्य विशेषताओं के कारण गंगा, यमुना, सिन्धु, गोदावरी, सरस्वती नमंदा तथा कावेरी आदि नदियों की गणना दिव्यत्रैणी में की गई है। भारत की नदियों में पवित्रता एवं माहात्म्य की दृष्टि से सर्वोच्च स्थान रखने वाली गंगा अपने अनेक गुणों के प्रभाव से विश्व की श्रेष्ठतम नदी है। गंगोत्री से लेकर गंगा सागर तक उसके सैकड़ों तीर्थों तथा अजग्रवाहिनी पावनधारा से जितने नर-नरी पशु-पक्षी तथा कीट-पतंग अपना ऐहिक और पारलौकिक कार्य चलाते हैं, उतनी संख्या विश्व की किसी महानदी को नहीं प्राप्त है। जो लोग नित्य गंगा में स्नानकरने का पुण्यावसर नहीं निकाल पाते वे केवल दर्शन करने अथवा स्पर्श एवं आचमन करने के लिए थोड़ासारा गंगा का जल ले जाकर अपने घोरों में रखते हैं। अनेक लोग स्नान-पञ्जनादि के समय गंगाजल के अभाव में केवल गंगा का नामस्मरण करते हैं। इस प्रकार प्रतिदिन इस विशाल देश में करोड़ों व्यक्तियों द्वारा संस्मृत, ध्यानावर्स्थत, पूजित, मजिज्त और पीतगंगा की महिमा की समानता विश्व में कोई भी नदी नहीं कर सकती है। यही कारण है कि प्राचीन काल से लेकर अधुनात्मन काल तक के भारतीय साहित्य गंगा की महिमा से भरे पड़े हैं। सहस्रों वर्षों की उसकी अपार महिमा देश के कण-कण में व्याप्त हो गई है वैज्ञानिक गंगा जल में हिमालय की औषधियों का प्रभाव होने से उसके जल में कीटाणु नहीं पड़ने की सिद्धि में लगे हैं, तो धार्मिक लोगों के लिए वह पुण्यसलिला भगवान्-रविष्युके पद से निकलने के कारण समस्त ऐहिक और पारलौकिक व्याधियों को हरनेवाली बनी हुई है। लौकिक व पौराणिक मान्यतानुसार गंगा का दर्शन करने, पान करने, तथा अवगाहन करने से मनस्त तर जाता है। परंगा के जल में पाणों पातरेयों को जास करने

करन से मनुष्य तो जाता है निम के जल म पापा एवरागा का नाश करने की अमोघ शक्ति है। उसकी पावन धारा की कलकलमयी स्वर लहरी से सुन कर भी मनुष्य थोड़ी देर के लिए किसी दूसरे भाव में मग्न हो जाता है। समस्त आनन्दमंगल की विघायिनी, सुख -समझद्वी की प्रदायिनी और समस्त ऐंहिक-पारलौकिक विपदाओं की विनाशिनी गंगा के समान कोई अन्य नदी नहीं है। माताके समस्त पालक गुण गंगा में विद्यमान होने के कारण ही गंगा को माता कहा गया है। है। यही कारण है प्रत्येक भारतीयों की यह कामना होती है कि वे अन्न समय में वे अपनी प्यारीराम गंगा माता की गोद में ही अपना चिर शयन करे और उसके शरीर के कण गंगा के ही जल-कण में विलीन हो जायें गंगा की यह अगाध महिमा चिरकाल से भारतीय प्रतिभा को प्रेरणा देती रही है। सनातन वैदिक धर्ममें तो इंश्वर की सत्ता के अनन्तरधरती पर गंगा से बढ़कर कोई आराध्य नहीं है। बौद्ध, जैन आदि सम्प्रदायों में भी गंगा की पवित्रता एवं आध्यात्मिक शक्ति की विचित्रता को स्वीकार किया गया है। गंगा केवल शारीरिक एवं भौतिक संतारों को शान्त करने वालीनहीं मानी गयी है, प्रत्युत आन्तरिक एवं आध्यात्मिक शान्ति का अविनाशी बीज भी उसकी चंचल तरंगों में बहताचला आ रहा है। यही कारण है कि कोई भीहिन्दू उसे नदी के रूप में न तो देखनापासदं करता है, और न दृसरों के मुख से सुनना ही चाहता है। उसकी अनिम कामना यही रहती है कि मृत्यु के समय उसके मुख में एक बूँद भी गंगा जल कहीं से पड़ जाय। गंगा की लहरों में ऐसाप्रभाव है कि कठोर नास्तिक भारतीय का हृदय भी गंगातट पर पहुँच कर एक बार अपूर्व भावनाओं से भर जाता है। पुराणों में ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि त्रिदेवों का गंगा से निकट सम्बन्ध बताया गया है।

भगवान् विष्णु के पदनख से प्रसूत हांकर वह ब्रह्माकं कमण्डल और
शिव की जटा में विराजमान है। यह सत्य है कि गंगा के साथ हीने से
किसी भी देवी-देवता की महत्ता में चार चाँद लग जाते हैं। हरिद्वार और
प्रयाग का गंगाजल लें जाकर रामेश्वरम्? के शिव लिंग पर चढ़ाने की
पुरानी प्रथा आज भी अनवरत जारी है। ऋष्वेद में गंगा का उल्लेख
केवल दो बार -ऋष्वेद 10/75/5, 6/45/31 आया है, परन्तु शतपथ
ब्राह्मण के 13/5/4/11, जैमिनीय ब्राह्मण के 3/183 और
तैतिरीयआरण्यक के 2/10में गंगा का उल्लेख किया गया है। वाल्मीकि
रामायण, महाभारत आदि महाकाव्यों के साथ ही ब्रह्मपुराण अध्याय 8,
71, 72, 73, 74, 76, 78, 90, 104, 107, 116, 172, 173,
174, 175, पद्मपुराण (स्वर्ग खंड 16, उत्तर खंड 23, विष्णुपुराण
8/4,- शिव पुराण ज्ञान संहिता अध्याय 53,54, मत्स्यपुराण अध्याय
105, श्रीमद्भगवत् पुराण 16, 17, (१६, देवी भागवत के 2/ 54/
7, 1/75/36, 7/11/31, वृहन्नरादीय पुराण 61/65/19, मार्कोण्डेय
पुराण 56, अग्नि पुराण 70, 71, 72, ब्रह्मवेवर्त पुराण प्रकृति खण्ड
6, 10, 115, 12, गणेश खण्ड, रेवा खण्ड 34, 35 ३४, लिंग पुराण
(पूर्व भाग 52), वराह पुराण 171, भविष्य पुराण प्रथम भाग 8, द्वितीय
भाग 17, स्कन्द पुराण देव काण्ड, दक्ष खण्ड, 21-25, पष्ट सौर
संहिता 6/20, अम्बिका खण्ड 196-197 १९६-१९८, काशी खण्ड
73, नागर खण्ड तीसरा परिच्छेद 22, 23, 15, 56, प्रभास खण्ड
166, 168, ब्रह्मण्ड पुराण 46 तथा वामन पुराण 34, वृहद्भूम पुराण
में गंगा सम्बन्धी कथाएं व विभिन्न विवरणी अकित हैं।

नई चुनौतियों के घेरे में आज की पत्रकारिता

सुनील कुमार महला

एंजेसियों, संपादकों, विज्ञापकों, लेखकों, साहित्यकारों सभी को इस लेखक की तरफ से बहुत बहुत बधाई और हार्दिक शुभकामनाएं। जैसा कि आप सभी यह बात जानते ही हैं कि पत्रकारिता लोकतन्त्र का चौथा स्तर्णं है। पत्रकारिता का उद्देश्य ही लोगों को कुछ नया, कुछ दिलचस्प और उपयोगी बताना है जो वे नहीं जानते। यहाँ यह बात बताना बहुत जरूरी है कि आज गली गली मोहल्ले मोहल्ले पत्रकार पैदा हो रहे हैं, जिन्हें पत्रकारिता का "क" का भी ज्ञान नहीं है, वे भी पत्रकार बन रहे हैं। बहुत बार पुलिस द्वारा फर्जी पत्रकार पकड़े जाते हैं। बहुत से लोग अपने निजी वाहनों पर प्रैस शब्द का गलत इस्तेमाल करते हैं। इससे पत्रकारिता व पत्रकारों की साथ को बड़ा लग रहा है। ऐसे भी पत्रकार हैं जो सूचना व खबर में अंतर नहीं कर पाते। खबर व सूचना में अंतर होता है। सूचना, खबर नहीं होती। खबर वह है जिसे कोई व्यक्ति समाज से छिपाने का प्रयास कर रहा हो। पत्रकारिता की भाषा में ही खबर की परिभाषा को

काट ले तो वह खबर का हिस्सा नहीं है तेकिन यदि आदमी कुत्ते को काट ले तो वह खबर का हिस्सा है। कुल मिलाकर बात यह है कि जिस पर यकायक कर्डै विश्वास नहीं करें, वही खबर है। कुत्ते द्वारा आदमी को काटना एक स्वाभाविक व प्राकृतिक प्रक्रिया है, जबकि आदमी द्वारा कुत्ते को काटना, देखने को नहीं मिलती। इसीलिए यह खबर है। सच तो यह है कि पत्रकारिता सेथे हुए को जगाने का काम करती है। जिन तथ्यों को समाज से छिपाने का कार्य किया जा रहा हो, उनको समाज के समक्ष लाने का काम पत्रकारिता, पत्रकार ही करते हैं। यह पत्रकारिता ही होती है जो न केवल समाज को आइना दिखाने का कार्य करती है बल्कि समाज को एक नई दिशा एवं दरशा भी प्रदान करने का भी कार्य करती है। निष्पक्ष व निर्भीक पत्रकारिता ही लोकतंत्र को मजबूती प्रदान करती है, तेकिन प्राचीन काल की तुलना में पत्रकारिता के मूल्यों में अनेक कमियां देखने को मिलती है। आज पैड पत्रकारिता जन्म ले चुकी है। सच्ची पत्रकारिता के साथ देश भी आगे बढ़ता है। महात्मा के अनुसार, 'पत्रकारिता के तीन उद्देश्य हैं जनता की इच्छाओं, विचारों को समझने और उन्हें व्यक्त करना है। दूसरा उद्देश्य जनता की वांछनीय भावनाएं जागृत करना और तीसरा उद्देश्य सार्वजनिक देखें को नष्ट करना जो भी हो पत्रकारिता दिवस के क्या विद्वीं का पहला अखबार कैनसा था, इसमें यहाँ थोड़ी बात करते हैं। बताना चाहिए कि 'उद्दन मारण्ड' को पहला हिंदी भाषी होने का दर्जा प्राप्त है, जो एक साल भी सका। वैसे, भारतवर्ष में आधुनिक पत्रकारिता का जन्म अठारहवीं शताब्दी चरण में कलकत्ता, बंबई और मद्रास में 1780 ई. में प्रकाशित हिंदू का हॣगजटद्वारा दिल्ली इस ओर पहला प्रयास था। समय के साथ पत्रकारिता कई बदलाव गुजरी है, आज सोशल नेटवर्किंग साइट जमाना है और जैसे-जैसे सोशल मीडिया प्रचलन बढ़ रहा है, पत्रकारिता एक अद्वितीय विषय बन रहा है।

लोकतांग्रिक सामर्थ्य का अमिट आलेख है नया संसद भवन

ललित गर्ग



के लिये इस राष्ट्रीय-अनुष्ठान को विरोध के लिये चुना। प्रतीत होता है देश विभाजन का जो आधार रहा, वह विभाजन के साथ समाप्त नहीं हुआ, अपितु अद्वय रूप में विभाजन का बड़ा रूप लेकर तथाकथित विपक्षी दल रूपी अलोकतात्त्विक दिमागों घुस गया है। नया संसद भवन किसी एक दल का नहीं, समूचे राजनीतिक दलों का मंच है, फिर क्या सोच कर विपक्ष ने इससे दूरी बनायी। यह दुराव एवं बिखारव की सोच सदियों तक दर्ज रहेगी, जब भी इन्हीं विपक्षी दलों में समझदार लोगों का वर्चस्व स्थापित होगा, उस वक्त आज के नेताओं की यह गलत सोच उन्हें परेशान करेंगी। क्योंकि संसद भवन जैसी ऐतिहासिक इमारत सदियों में बनती है। नयी संसद भवन का बनाना और उसका उद्घाटन होगा, भारतीय लोकतंत्र की खूबसूरती एवं महत्ता को नये शिखर देने का अवसर था। इस बहिष्कार के कारणों से सहमति-असहमति हो सकती है, लेकिन बड़ी बात यह है कि वे कारण दूर होने चाहिए थे। भारतीय लोकतंत्र की यह खूबी रही है कि तमाम मतभेदों और असहमतियों के होते हुए भी हमारा राजनीतिक नेतृत्व जरूरत पड़न पर उनसे ऊपर उठने के उदाहरण प्रस्तुत करता

भवन के उद्घाटन समाराह को जा तस्वीर दुनिया के सामने गई वह भारतीय लोकतंत्र को मजबूती देने वाली एवं भाजपा सरकार की स्थिति को सुधृद करने वाली है। बेहतर होता यदि इसके उद्घाटन को लेकर सियासत नहीं होती। तब पूरे विश्व में एकजुटता का संदेश जाता। भारत के लोगों के लिए देश को नई संसद का मिलाना एक भावनात्मक राष्ट्रीय मुद्दा है, इससे उनका स्वाभिमान बढ़ा है और भारतीय अपने स्वाभिमान के लिए जाने जाते हैं। उनके लिए राष्ट्र सर्वोपरि है। अन्य सभी मुद्दे उनके लिए इस अवसर पर गौण हैं।

लगभग एक सदी पूरानी इस संसद भवन को इमारत को मरम्मत और विस्तार से अब तक काम चल गया, लेकिन धीरे-धीरे यह भी स्पष्ट हो गया कि अब सर्वथा नई इमारत अपेक्षाकृत ज्यादा बड़ी, आधुनिक सुविधायुक्त इमारत की जरूरत है। उस लिहाज से केविड जैसी प्रतिकूलताओं के बीच जितनी कम अवधि में यह पूरी इमारत तैयार कर ली गई, वह निश्चित रूप से काबिले तारीफ है। हालांकि यह सच है कि इसके निर्माण के समय और तरीके को लेकर शुरू से ही असहमतियां थीं रहीं, लेकिन एक जीवित लोकतंत्र में यह कोई अनोखी बात नहीं है। सर्वविदित है कि संसद के नए भवन का निर्माण आवश्यक था, इस तथ्य से परिचित होने के बावजूद भी विपक्ष के किसी नेता ने कहा कि उसकी आवश्यकता ही क्या थी तो किसी अन्य ने उसकी तुलना ताबूत से करने की धृता करने में भी शर्म नहीं की। टिप्पणियां तो इससे भी ज्यादा लज्जाजनक एवं शर्मनाक आईं और विपक्षी नेताओं को अपने इस तरह के घोर नकारात्मक रखवैये पर शर्मिदं होना चाहिए था, तब वे अपने कुतकों की तलाश में लगे रहे। इस भारतीय लोकतंत्र के बड़े सपने के आकार देने महान अवसर से दूरी बनाने के लिए किसी सस्ते बहाने की तलाश करते हुए उन्होंने इसमें खोज निकाला कि उद्घाटन राष्ट्रपति के हाथों क्यों हैं। यह एक सपने का सच में बदलने का अवसर कुछ के लिये गर्व करने का माध्यम बनेगा, वहीं कुछ के लिये अपनी ऐतिहासिक भूलों के लिये पश्चातप का कारण बनेगा। अस्तित्व को पहचानने, दूसरों के अस्तित्वों से जुड़ने, राष्ट्रीय पहचान बनाने, लोकतंत्र को समृद्ध-शक्तिशाली बनाने और अपने अस्तित्व को राष्ट्र के लिये उपयोगी बनाने के लिये यह स्वर्णिम अवसर था। क्योंकि इस दिन संसद के नए भवन के उद्घाटन के साथ ही एक नए इतिहास का निर्माण हुआ। स्वतंत्र भारत की संसद के नए भवन को जो महत्ता और गरिमा प्रदान की गई, वह समय की मांग थी। संसद के नए भवन का रिकार्ड समय में निर्माण और उसका भारतीयता से पगे विभिन्न धर्मों की प्रार्थनाओं के माहौल में उद्घाटन ने आत्मनिर्भर और आत्मविश्वास के से भरे भारत की एक नई झलक पेश की। वास्तु, विरासत, कला, संस्कृति, समृद्ध इतिहास, बलिदानी भारत-निर्मार्ताओं के साथ संविधान की छवियों को समेटे संसद के नए भवन के भव्य उद्घाटन ने यह विश्वास पैदा करने का काम किया कि अमृतकाल में भारत नई ऊँचाइयां स्पर्श करेगा और उन सपनों को साकार करेगा, जो हमारे राष्ट्र निर्मार्ताओं ने देखे थे। भारत समृद्ध भी होगा, विश्व गुरु भी होगा, शक्तिशाली भी होगा। प्रेषक:

पूरी दुनिया भारत की ओर देख रही है

किशन भावनाना

का नाम लंबे समय से गूंजता आया है। प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध तो हो गए, परंतु अभी दोनों महाशक्तियों की बर्तमान समय में रूस-यूक्रेन मुद्दे पर भी तनाती पिछले कई दिनों से चल रही है और दोनों की टकराहट का अंजाम तीसरा विश्वयुद्ध भी होने की संभावना जानकारों द्वारा समय-समय पर व्यक्ति की जा रही है, परंतु हाल में कुछ वर्षों में इन दोनों महाशक्तियों के बीच तीसरी महाशक्ति जिसका नाम भारत है, के उदय होने का आभास वैश्विक चर्चा और रूस यूक्रेन युद्ध में समझौता कराने के लिए, मध्यस्थ के रूप में उम्मीदों भरी नजरों से देखा जाना, दोनों महाशक्तियों से बहुत अच्छा तथा सुदृढ़ संबंध होना, आईएमएफ द्वारा भारत की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था का बयान, मूडीज एंजेंसी द्वारा रैंकिंग में भारत को तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था करार देना, जीडीपी की रिपोर्ट स्टीक देना, वैश्विक मर्चों पर भारत को मिलते हुए महत्व और 22 जून 2023 को भारतीय पीएम के अमेरिका अधिकारिक दौरे और क्वाइट हाउस द्वारा उनके सम्मान में रात्रि प्रतिभोज का आयोजन करना और अमेरिकी राष्ट्रपति का जी-20-2023 के वार्षिक सम्मेलन में भाग लेने 9-10 सितंबर 2023 को भारत दौरा उनके स्टीक और बढ़ते याराने का सबूत है जिसपर दुनिया की नजरें लगी हुई है और दोनों देशों में 28 मई 2023 को अनुकूल पलों जैसे भारत में नए संसद भवन का उद्घाटन और अमेरिका में सरकारी ऋण समझौता को लेकर अमेरिकी राष्ट्रपति और अमेरिकी संसद के अध्यक्ष व अमेरिकी रिपब्लिकन पार्टी के बीच सैद्धांतिक सहमति का बन जाने का ऐतिहासिक पल जिससे अमेरिका के दिवालिया होने से बच जाने, भारत



अमेरिका की दोस्ती के नए आयाम बनने इतिहास के सबसे बड़े लोकतंत्र और अमेरिका के सबसे पुराने लोकतंत्र की ओर दुनिया हसरत भरी नजरों से देख रही है। व्योंगिक भारत तेजी से बढ़ती महाशक्ति के रूप में तेजी से उभरता हुआ दिखाई दे रहा है, इसीलिए पांच दशक से पहले अधिक पहले समय से आए वर्ष 1981 में 10 जनवरी को रिलाइ हुई हिंदौ फीचर फिल्म याराना का अंजान द्वारा लिखा गीत, तेरे जैसा यार कहां कहां ऐसा याराना, याद करेगी दुनिया तेरा मेरा अफसाना गीत को हमारे युवाओं को जरूर सुनना चाहिए। व्योंगिक भारत अमेरिका की सकारात्मक दोस्ती संबंधों से नए-नए ऐतिहासिक आयाम लिखे जा सकते हैं, एक और एक ग्यारह का फार्मूला प्रैक्टिकल में बन जाता है और सुख दुख दोनों कंधों से कंधा मिलाकर जिंदगी रूपी पटरी पर चल रहे जीवन रूपी रेलगाड़ी के दोनों पहिए बनकर नैया पार करते हैं। साथियों बात अगर हम भारत के दुनियां की तीसरी महाशक्ति के रूप में उभरता भारत के इतिहास के पन्नों में दर्ज हो जाने वाला पल, नई संसद भवन का उद्घाटन 28 मई 2023 पर माननीय प्रीमिंसे दो संसदीय चर्चाएँ दो पाल आया

जब भारत दुनिया के सबसे समृद्ध और भवशाली राष्ट्रों में गिना जाता था। भारत वे नगरों से लेकर महलों तक, भारत के दिरों से लेकर मूर्तियों तक, भारत का स्तुति, भारत की विशेषज्ञता का उद्घोरता था। सिंधु सभ्यता के नगर नियोजन लेकर मौर्यकालीन स्तंभों और स्तुपों क, चोल शासकों के बनाए भव्य मंदिरों से लेकर जलाशयों और बड़े बांधों तक, भारत का कौशल, विश्व भर से आने वाले अंतियों को हैरान कर देता था। लेकिन कड़ों साल की गुलामी ने हमसे हमारा देवरव छीन लिया। एक ऐसा भी समय अस्ति या जब हम दूसरे देशों में हुए निर्माण के खंखकर मुथ हाँसे लग गए। 21वीं सदी की भारत, बुलंद हौसले से भरा हुआ भारत, अब गुलामी की उस सोच को पीढ़ी पीड़ रहा है। आज भारत, प्राचीन काल के स गैरवशाली धारा को एक बार फिर अपनी तरफ मोड़ रहा है। और संसद की रेप्रेसेंटेशन इस्मारत, इस प्रयास का जीवंत प्रतीक नहीं है। आज नए संसद भवन को देखकर भारतीय गैरव से भरा हुआ है। इस भवन में विरासत भी है, वास्तु भी है। इसमें गुला भी है, कौशल भी है। इसमें संस्कृति भी है, और संविधान भी है।

के पुराने भवन में, सभी के लिए अपने कार्यों को पूरा करना कितना मुश्किल हो रहा था, ये हम सभी जानते हैं। टॉकोलॉजी से जुड़ी समस्याएं थीं, बैठने की जगह से जुड़ी चुनौती थी। इसलिए ही बीते डेढ़ दो दशकों से ये चर्चा लगातार हो रही थी कि देश को एक नए संसद भवन की आवश्यकता है। और हमें ये भी देखना होगा कि आने वाले समय में सीटों की संख्या बढ़ेगी, सांसदों की संख्या बढ़ेगी, वो लोग कहाँ बैठते ? और इसलिए ये समय की मांग थी कि संसद की नई इमारत का निर्माण किया जाए। और मुझे खुशी है कि ये भव्य इमारत आधुनिक सुविधाओं से पूरी तरह लैस है। आप देख रहे हैं कि इस समय भी इस हॉल में सूरज का प्रकाश सीधे आ रहा है। बिजली कम से कम खर्च हो, हर तरफ लेटेस्ट टेक्नोलॉजी वाले गैजेट्स हों, इन सभी का इसमें पूरा ध्यान रखा गया है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र को यह नई संसद एक नई ऊर्जा और नई मजबूती प्रदान करेगी। हमारे श्रमिकों ने अपने पसीने से इस संसद भवन को इतना भव्य बना दिया है। अब हम सभी सांसदों का दायित्व है कि इसे अपने समर्पण से और ज्यादा दिव्य बनाएं। एक राष्ट्र के रूप में हम सभी 140 करोड़ भारतीयों का संकल्प ही, इस नई संसद की प्राण-प्रतिष्ठा है। यहां होने वाला हर निर्णय, आने वाली सदियों को सजाने-संवानने वाला है। यहां होने वाला हर निर्णय, आने वाली पीढ़ियों को सशक्त करने वाला होगा। यहां होने वाला हर निर्णय, भारत के उच्चतम भविष्य का आधार बनेगा। गरीब, दलित, पिछड़ा, आदिवासी, दिव्यांग, समाज के हर वर्चित परिवार के सशक्तिकरण का, वर्चितों को वरीयता का रास्ता यहीं से गुजरता है। इस नए संसद भवन की हर ईंट, हर दीवार, इसका कण-कण गरीब के कल्पणा के लिए समर्पित है। अगले 25 वर्षों में संग्रह के द्वारा ज्ञान भवन में बनने वाले

फृता बनने की चुगली

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा

मैं अपने गांव का कुत्ता हूँ। बस्ती वालों पर आपदा बाद में आती है उससे पहले मैं भौंक देता हूँ। मेरे इस भौंकने और कुत्तागिरी के बारे में आए दिन समाचार पत्र वाले छापते भी हैं। ऐसा नहीं है कि वे हमें शौक से छापते हैं बल्कि उन समाचार पत्रों के संवाददाताओं-संपादकों से हमारा उठना-बैठना नियमित रूप से चलता है। वे जो चाहते हैं हम वह देते हैं। इस हाथ दे उस हाथ ले पॉलिसी का ईमानदारी से पालन करना मेरे खून में रचा-बसा है। इधर कुछ दिन पहले प्रधानी के चुनाव के बारे में समाचार पत्रों में खबर छपी। मैं इस खबर से बहुत चमत्कार था। ऐसा

देगा। इसी प्रतीक्षा में कुछ दिन बीत गए। फिर मैं सोचने लगा यह तो पार्टी का टिकट है न कि कोई बीमारी का, जो खुद ब खुद चल कर मेरे पास आएगी। सो मैंने निर्णय किया कि मैं ही चलकर फलाना-फलाना पार्टी कार्यालय से टिकट ले लेता हूँ। टिकट बांटने वाले माहौल में एक बार के लिए भगवान के दर्शन हो सकते हैं लेकिन पार्टी अध्यक्ष के नहीं। कई नई चपलों को घिसवाकर या यूं कहें कि शहीद करवाकर पार्टी अध्यक्ष से झेंट की। पार्टी अध्यक्ष ने मुझे फट से पहचान लिया और कई सारे उम्मीदवारी के इच्छाधियों के साथ-साथ मुझे भी पत्ता आवेदन पत्र दे दिया। आवेदन

